नदी और लता

(कविता)

17

नदिया एक किया करती थी,
निज लहरों से खेल सदा।
उसके तट पर झूमा करती,
एक मनोहर कुसुम-लता।।

उसी लता पर पंछी आते,
कलरव गान सुनाते थे।
नदी अकेली जो थी बहती,
उसका मन बहलाते थे।।

पुष्प भेंट कर लता नदी को,
सदा सजाया करती थी।
देकर नदी उसे जल शीतल,
ताप सदा ही सहती थी।।

दोनों सखियाँ सदा प्रेम से,
समय बिताती जाती थीं।
स्नेह परस्पर जो था उनमें,
उससे वे सुख पाती थीं।।

एक दिवस वर्षा का जल पा,
नदी लगी थी *इतराने*।
धन के *मद* में भला लता को,
वह तो क्यों कर पहचाने?

उस नदिया ने *सीमा* तोड़ी,
दीन लता को मसल दिया।
उसके पत्तों को, फूलों को,
नदिया ने था निगल लिया।।

लता मरी, झड़ गए फूल सब,
वह शोभा थी कहाँ रही।
विहगों की भी कल-कल *मृदु*-ध्वनि,
सुनने को थी नहीं रही।।

वर्षा का सब सलिल बहा जब,
टूटा घंमड नदिया का।
जगी नम्रता फिर उसमें पर,
वहाँ नहीं थी सखी लता।।

नहीं लता थी, नहीं कुसुम थे,
न पंछी कल-कल करते।
नदिया बस थी, वहाँ अकेली,
हाय! हाय! *जलकण* करते।।

सजा हुआ था तट जो पहले,
आज वही सुनसान हुआ।
भर घंमड में उस नदिया ने,
लता सखी को बहा दिया।।

अहर-अहर कर नदिया रोती,
सखी नहीं पर मिल पाती।
अपनी ही करतूतों पर वह,
रात-दिवस है पछताती।।

जब हम पाते धन हैं या पद,
हम घंमड से भर जाते।
मित्रों को ठुकराते हैं तब,
होश में हम न आ पाते।।

पर जब है यह नशा उतरता,
हमें *चेतना* तब आती।
गए मित्र फिर पास न आते,
सदा उदासी छा जाती।।

कभी नहीं तुम मित्र जनों को,
भर घंमड में दुत्कारो।
सदा स्नेह ही उन्हें दिखाओ,
कभी नहीं तुम फटकारो।।

कविता का भावार्थ – प्रस्तुत कविता में कवि नदी और लता की मित्रता का वर्णन करते हैं। एक नदी हमेशा किनारे पर एक सुंदर खेल खेलती थी। उसके किनारे पर एक सुंदर फूलों को बेल झूलती थी। उसी लता पर पक्षी आकर अपना मीठा गीत सुनाते थे। जो नदी अकेली बहती थी वह उसके मन को बहलाते थे। लता हमेशा अपने फूलों को नदी को भेंट देकर उसे सजाया करती थी। नदी लता को सदा ठंडा जल देती और स्वयं गरमी सहन करती थी। वे दोनों सहेलियों की तरह प्यार से अपना समय व्यतीत करती थी। उस एक-दूसरे के दुलार और प्यार से वे सुख प्राप्त करती थी। एक दिन बारिश के पानी को पाकर नदी खुद पर घमंड करने लगी थी। धन के घमंड में आकर वह लता को भी नहीं पहचान रही थी। नदी ने अपनी मर्यादा को तोड़कर लता को नष्ट कर दिया। उसके पत्ते और फूल नदी बहाकर ले गई। फूलों के झड़ने पर लता खत्म हो गई। उसकी शोभा भी नष्ट हो गई। पक्षियों की भी मीठी और मधुर वाणी नदी को सुनने को नहीं मिलती। वर्षा का जल बह जाने पर नदी का घमंड टूटा। नदी में फिर दया जागी लेकिन उसकी सहेली लता वहाँ पर नहीं थी। न तो लता थी, न फूल, न ही पक्षियों का चहचहाना सुनाई पड़ता। नदी वहाँ बिल्कुल अकेली थी। जो किनारा पहले सजा हुआ था वह आज बिल्कुल सुनसान है। अपने घमंड में चूर होकर नदी ने अपनी सहेली लता को बहा दिया। नदी हाय! हाय! कर रोती परंतु उसकी सखी नहीं मिल पाई। अपने ही किए हुए काम पर वह रात-दिन पछताती है। ऐसे ही जब हम मनुष्यों के पास ढेर सारा धन या फिर ऊँचा पद आता है, तो हम घमंड से भर जाते हैं। घमंड से भरे होकर हम अपना होश भूल जाते हैं और अपने दोस्तों को ठुकरा देते हैं। लेकिन जब घमंड का नशा उतरकर हमें होश आता है तब गए हुए मित्र न तो वापस लौटकर आते और जीवन में सदा के लिए उदासी छा जाती है। घमंड में भरकर कभी भी मित्रों को दुत्कारना नहीं चाहिए। उन्हें हमेशा प्यार दिखाना चाहिए, फटकार नहीं।

शब्द-अर्थ

कुसुम-लता — फूलों वाली बेल *(a flower climber)*,
स्नेह — प्रेम *(love)*,
मद — अभिमान *(pride)*,
विहग — पक्षी *(bird)*,
जलकण — पानी की बूँदे *(water drops)*,
पद — दर्जा *(post)*,
ताप — गरमी *(heat)*,
इतराना — घंमड से चलना *(boasting)*,
सीमा — हद, मर्यादा *(limit)*,
मृदु — मीठा *(sweet)*,
अहर-अहर — हाय-हाय *(Alas! Alas!)*,
चेतना — होश *(consciousness)*।

अभ्यास

मौखिक

1. इन शब्दों को पढ़कर सुनाइए–

मनोहर	कलरव	भेंट	शीतल	सखियाँ
परस्पर	सलिल	नम्रता	करतूतों	दुत्कारो

2. निम्नलिखित प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए–

(क) प्रस्तुत कविता में कवि ने किसके बारे में बताया है?

(ख) दोनों सखियाँ सदा प्रेम से क्या बिताती जाती थीं?

(ग) दोनों सखियों में से कौन क्या पाकर इतराने लगा था?

लिखित

1. सही उत्तर पर (✓) का निशान लगाइए–

(क) लता नदी को कैसे सजाती थी?

☐ मनोरंजक क्रीड़ाएँ करके ☐ शीतल छाया देकर ☐ पुष्प भेंट करके

(ख) मित्रता में बाधक है-

☐ सुख-दुख में साथ ☐ घमंड ☐ स्नेह

2. निम्नलिखित कविता की पंक्तियाँ पूरी कीजिए–

(क) पुष्प भेंट ..... को,
..... करती थी।
देकर ..... शीतल,
ताप ..... ।।

(ख) कभीं नहीं ..... ,
..... दुत्कारो।
सदा स्नेह ..... ,
..... फटकारो।

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) इस कविता में किन दो सखियों का वर्णन किया गया है?

(ख) सखियाँ एक दूसरे के लिए क्या-क्या करती थीं?

(ग) नदी ने अपनी सखी के साथ क्या बुरा व्यवहार किया?

(घ) नदी को स्वयं पर पश्चाताप कब और कैसे हुआ?

भाषा-ज्ञान

1. पद, मन, स्नेह, पास -अनेकार्थक शब्द हैं, क्योंकि इनके एक से अधिक अर्थ हैं। इन शब्दों के दोनों अर्थों को दर्शाने वाला एक-एक वाक्य बनाइए।

2. इन संज्ञाओं के साथ उचित विशेषण लगाइए-

	विशेषण	संज्ञा		विशेषण	संज्ञा
(क)	.....	कुसुम-लता	(ख)	.....	तट
(ग)	.....	जल	(घ)	.....	दिवस
(ङ)	.....	नदी	(च)	.....	फूल

3. 'है' और 'हैं' का प्रयोग करते हुए वाक्यों को पूरा कीजिए–

(क) नदी के तट पर एक मनोहर कुसुम-लता ..... ।

(ख) लता पर बैठे पक्षी कलरव कर रहे ..... ।

(ग) बारिश जोर से हो रही ..... ।

(घ) नदी के किनारे सुंदर फूल खिले ..... ।

क्रियात्मक गतिविधि

- क्या आप कभी अपने मित्र से बिछुड़कर मायूस हुए हैं। ऐसी स्थिति कब और क्यों आई? क्या आपने अपने मित्र से समझौता करने का प्रयत्न किया है? आपकी मित्रता पुनः कैसे हो पाई? यदि नहीं, तो उन दिनों आपकी मन की स्थिति कैसी थी? चर्चा कीजिए।
- बरसात के दिनों में नदी के किनारे जाकर देखें कि वह अपने प्रवाह में क्या-क्या चीजें बटोरे जा रही है? इस दृश्य का एक सुंदर चित्र भी बनाइए।